International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-08-2023, Accepted: 02-09-2023, Published: 18-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 24-26

राजेश जोशी की कविताओं में कथा–लोक

भास्कर लाल कर्ण
एसोसियेट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
हिन्दी के सुप्रसि) कवि राजेश जोशी की कविता केवल कविता नहीं है। वो एक कहानी भी हैए एक क़िस्सा भी। अपने वृतांत में गप्प के साथ एक गाथा लिए चलती है। भले इन कविताओं का पाठ शास्त्र के परंपरागत ढाँचे में भी किया जा सकता है लेकिन पढ़ते हुए उसकी मार्मिकताए उसका परिप्रेक्ष्य एवं संवेदनशीलता विविध आयामों के साथ विस्तार ले लेती है। संभवतः इसीलिए कहा जाता है कि इन कविताओं की समीक्षा अधिक बोझिल हो जाती है। इसका मूल कारण है कविताओं में समाहित कथालोकए जो विधात्मक तत्त्व–विधानों का अतिक्रमण कर ना केवल शैली में नया लेती है वरन् उद्देश्य को भी एक नई परिधि देती है।

मूल शब्दः कथा, कहानी, क़िस्सा, गाथा, बिंब, दृश्य, भूमण्डलीकरण, संवेदनशीलता, कविता, व्यंग्य, नाटकीयता, स्वप्न, यथार्थ

'और आदमी को मारने जितना आसान नहीं
गाथाओं को मारना'
(खिसियानी हँसी शीर्षक कविता से) [1]

कथा साहित्य के लिए पहचाने जाने वाली कथा जब काव्य साहित्य में प्रवेश करती है तो उसका ना केवल विधान बदलता है बल्कि आयाम भी विविधता के साथ नये रूप में उभर कर आती है। 1970–80 के दशक में साहित्य की दुनिया में आने वाले कवि राजेश जोशी आरंभिक दौर से ही कविता को ना तो कथा से दूर होने दिया ना कथा को कविता से। दोनों का समायोजन इतना सहज होता है कि कृत्रिमता की आँच भी नहीं आती। लोक–कथाए गाथा, क़िस्सा, कथा, कहानी जैसे शब्दों का प्रयोग भी कविताओं में आसानी से देखा जा सकता है। एक कविता का शीर्षक है 'असली क़िस्सा तबियत के हिरन हो जाने का', एक कविता का शीर्षक है 'उसके स्वप्न में जाने का यात्रा–वृतांत', एक कविता का शीर्षक है 'बड़ी उम्र में कार चलाना सीखने के बारे में' इसी तरह 'झाड़ू की नीतिकथा', 'चाकू का आत्मकथन', 'वह मुझे दुबारा जन्म देना चाहती थी', 'बिजली का मीटर पढ़ने वाले से बातचीत' जैसी शीर्षक जैसे कविता में आने वाले गाथा की पृष्ठभूमि बना देती है। जो आगे बढ़ कर मुनीर मियाँ, रमज़ान मियाँ, आदिवासी लड़की, लेबर कॉलोनी के बच्चे, माँ, पेड़, तोता–मैना, शहर, मौसम आदि चरित्र–पात्र बनकर कविताओं में चित्र कथा का रूप ले लेती है। सही कहा गया है कि राजेश जोशी की कविता छोटी–छोटी चीजों से लेकर बृहत्तर बहुलार्थी यथार्थ के आख्यानपरक वृतांतों और लोककथाओं तक व्याप्त जीवनानुभवों की रचनाशीलता का पर्याय है।[2]

राजेश जोशी के लगभग हर काव्य–संग्रह की कविताओं में किस्सागोई की हिस्सेदारी दिखाई देती है। कुछ कविताओं में तो इसे साफ तौर पर देखा जा सकता है। जैसे– दोपहर की कहानियों के मामा, जरिता के बच्चों की कहानी, किस्सा उस तालाब का, किस्सा काली धोबिन का, उस औरत का घोड़ा, नाना की साइकिल, रफ़ीक़ मास्टर साहब और काग़ज़ के फूल, बेटी की बिदाई, आठ लफ़ंगों और एक पागल औरत का गीत आदि–इत्यादि कविताएँ।

वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के दौर में राजेश जोशी अपनी कविताओं को व्यापक परिप्रेक्ष्य देते हैं। कविताओं के व्यापक विस्तृत दायरे में भोपाल की गलियों से अमेरिका तक की ख़बरें मिल जाती है। लेकिन कविताओं में कथालोक और उससे जुड़ी संवेदनशीलता का आगमन किसी अतिरिक्त की तरह नहीं होता। उनकी एक कविता है अतिरिक्त चीजों की मायाः

'बाज़ार से लेने जाता हूँ ज़रूरत की कोई चीज़
तो साथ थमा दी जाती है एक ओर चीज़ मुफ़्त
उस चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं मुझे
पर लेने से इंकार नहीं कर पाता उसे ....
अतिरिक्त हमारे मन की कमजोरी को पहचानता है
लालच धीरे–धीरे पाँव पसारता है
एक अतिरिक्त दूसरे अतिरिक्त को बुलाता है
और दूसरा अतिरिक्त तीसरे अतिरिक्त के लिए
जगह बनाता है
और एक दिन सारी जगह
अतिरिक्त से भर जाती है।'[3]

उनकी कविताओं में आने वाला दृश्य–बिंब, क़िस्सा–कोताह, कथा–कहानी बाज़ारू अतिरिक्त की माया से अलग एक सारगर्भित रूप लेती है। चूँकि गाथाएँ दृश्यों, प्रचलित परम्परित अर्थ में बिंबों और अभिव्यक्ति के कौशलों से नहीं बनतीं, वे कुशल और चतुर रचनायुक्तियों से भी नहीं बनतीं। वे समाज और जीवन में चल रही ऐतिहासिक शक्तियों की टकराहट और गतियों से बनती है।[4] इसीलिए राजेश जोशी की कविताएँ अक्सर परेशान करती हैं। क्योंकि उनकी कविताएँ केवल तर्क नहीं लाती बल्कि उसके साथ कुतर्कों की जो ताकतवर श्रृंखला है उसे भी सामने लाती हैं। जो एक तनाव पैदा कर देता हैं। कई रास्ते मिलते हैं कई आवाज़ें कौंध जाती हैं पर चुनाव कठिन हो जाता है। संभवतः इसीलिए 'कहीं जाने के लिए निकलता हूँ और सोचते–सोचते / मैं कहीं और निकल जाता हूँ।'[5]

राजेश जोशी की कविताएँ मुख्य रूप से उदासीनता (व्यक्तिक और सामाजिक स्तर की) के विरू) संवादों, संघर्षों और पारस्परिकता का वातावरण तैयार करती हैं। और कथा के स्रोत इस उपक्रम में कविता की अंतर्वस्तु के साथ मिलकर आते हैं।

'घृणा यूँ कोई बहुत अच्छी चीज़ नहीं है
लेकिन इतनी बुरी भी नहीं कि जहाँ ज़रूरी हो
वहाँ भी न की जा सके।
क्या ज़्यादा बुरा नहीं है उदासीन हो जाना।'[6]

कथा क्या करती है? अपने पूरे कलेवर और बुनावट में उदासीनता के विरू) ही तो खड़ी रहती है। उसकी रोचकता और दिलचस्प बयानगी गुँजा देती है उस सबको जो उदासीन हो रहा है। उनकी वर्ग–दृष्टि उनकी संवेदना को निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इनकी कविताओं में लोक–जीवन, लोक संवेदना और लोक कलाओं के प्रति ज़बरदस्त आकर्षण है जो उनके कथालोक के निर्माण में सहायक होती है।
राजेश जोशी की कविता में कथा एक ऐसा तत्त्व या बिन्दु है जो अक्सर पाठक को देर तक रोके रखता है। कथा के स्रोत बार–बार राजेश जोशी को आकर्षित करते हैं या कि कहा जा सकता है कि वे कविता में कहानी बनाते हैं। कथा के ये स्रोत अपनी कलात्मक शैली और आम जन से जुड़ाव के कारण लोककथा के अधिक निकट दिखाई देते हैं। हम सभी यह समझते और महसूस करते हैं कि लोककथाओं की एक विशिश्ट और मज़बूत जगह हमारी स्मृतियों में रहती है जिन्हें समय की धूल भी अपदस्थ नहीं कर पाती। बल्कि हम पाते हैं कि समय और परिस्थिति के अनुरूप ये कथाएँ हमारे विचारों से टकराते हुए जब चाहे नया होने की क्षमता रखती हैं और परम्परा के तत्त्वों को भी अपने भीतर समेटे रहती हैं। इस तरह लोककथाओं को हम अपनी जातीय विरासत का सबसे अच्छा प्रतिनिधि कह सकते हैं और राजेश जोशी इस जातीय विरासत का अपनी कविताओं में बखूबी प्रयोग करते हैं।
यूँ तो अधिकांश कविताओं में यह कथा तत्त्व साफ–साफ दिखाई देता है किन्तु जिनमें कथा सीधे–सीधे कथा न दिखाई दे वहाँ भी कथात्मक लय बनी रहती है। उनकी एक कविता है विलुप्त प्रजातियाँः

'हमारे समय में ऐसे हादसे अक्सर लोगों के साथ हो जाते हैं
आप अपनी यादाश्त के भरोसे
कई बरस बाद किसी शहर की किसी गली में
एक पुराने दोस्त या किसी परिचित का मकान खोजते हुए
किसी घर तक जाते हैं
उसका दरवाजा खटखटाते हैं
अपने परिचय का नाम लेकर आवाज़ लगाते हैं
कोई दूसरा ही आदमी बाहर निकलकर आता है और बताता है
कि वे अब यहाँ नहीं रहते
कि हमारे इस घर में आने से पहले ही शायद
वे घर छोड़कर चले गए होंगे
कि हमें तो यह भी पता नहीं कि वे कहाँ गए
लेकिन आस पड़ोस में भी कोई उन्हें जानता होगा
ऐसा नहीं लगता
कई लोग इसी तरह खो जाते हैं एक दिन
उनके नए पते किसी को पता नहीं होते
कई लोग और कई शहर के शहर
इसी तरह खो गए हमारी धरती से
पेड़ोंए पशुओं और परिंदों की न जाने कितनी प्रजातियाँ
विलुप्त हो गई, न जाने कब
अब तो उनकी कोई स्मृति भी
बाक़ी नहीं।'[7]

राजेश जोशी अपनी कविताओं में कथालोक को स्मृति की तरह संजोकर रख लेने के नुस्खे के रूप में इस्तेमाल करते हैं, इसीलिए यह भुला दी जाने वाली मानसिकता उनकी कविताओं के भीतर बड़ी चिंता बनकर आती है। उनकी एक अन्य कविता है

खोई हुई चीज़ें

वहाँ वर्षों से खोई हुई चीज़ें इकट्ठी थी
और एक भूत उनकी रखवाली करता था
इतनी साधारण चीज़ें वहाँ थी जिन्हें कभी का भूला दिया गया था
चिड़िया के आकार की वह सीटी...
घिस–घिस के छोटी हो चुकी पेंसिलें थी जिन्हें और अधिक
घिसा जाना संभव नहीं था...
बचपन की ड्राइंग कापियाँ...
वर्षों पहले खो चुके खिलौने थे, पतंगें थी...
बीत गया समय अभी भी वहाँ था...
खोई हुई उन असंख्य चीज़ों की एक भूत रखवाली करता था
वो भूत खुद भी एक खोया हुआ पात्र था
जो हमारी बचपन की कहानियों से कहीं खो गया था बहुत पहले
उस भूत ने एक दिन मुझसे कहा कि मैं इस किले से बाहर जाना चाहता हूँ
लेकिन इस किले के दरवाजे की चाबी मैं कहीं खो बैठा हूँ'[8]

राजेश जोशी कविताओं के ज़रिए यह बात पाठक तक पहुँचाते हैं कि जो कुछ भी हमारे पास बचा है, फिर चाहे वे पुराने शहर हों, तालाब हों, चीज़ें या सामान हों, संबंध हों या चेहरे वे भुलाए न जाएँ। कम से कम नष्ट हो जाने से पहले तक सम्भाल लिए जाएँ, अगर भौतिक रूप में संभव नहीं हो तो स्मृतियों में ही सही। यही स्मृतियाँ राजेश जोशी की कविताओं में भुला दी गई कथाओं का तानाबाना बुनते हुए भाव–विचार की मज़बूत मज्जा गुँथती हैं। तभी तो उनकी काव्यात्मकता से कथा की लय को अलग नहीं किया जा सकता। एक कवि की नोटबुक में राजेश जोशी ने नागार्जुन को याद करते हुए कहा । 'कभी–कभी लगता है जैसे नागार्जुन, नज़ीर और भारतेन्दु के मिले जुले उत्तराधिकारी हों! वहाँ सीधी सहज सम्प्रेषणीयता भी है और अद्भुत क़िस्म की नाटकीयता भी। उनके इस नाटक में व्यंग्य है, हँसी है, गुस्सा है, शरारत है, चुहल है। लेकिन सारा कुछ बेहद जाग्रत राजनीतिक चेतना के साथ। उनकी हँसी महज हँसी नहीं है। वह बेहद साहस भरी हँसी है जो अभिजात को छेड़ती है, जो अन्यायी का मज़ाक़ उड़ाती है। मज़ाक़ उड़ाने का उसपर हँसने का साहस देती है।'9 व्यंग्यात्मक तेवर में राजेश जोशी कवि नागार्जुन से अलग हैं पर उनकी कविता का कथालोक कुछ ऐसा ही है।
कहानियाँ जब आत्मीय संबंध स्थापित करती हैं तब उनकी छूटी हुई जगहों के बीच हम खुद को रखकर एक नया अर्थ पाते हैं। राजेश जोशी की कविताओं में कथा की लय इन छूटी हुई जगहों से पुकार कर हमें उनके भीतर बुला लेती है। कविता के भीतर इस तरह जाना कि वह अपना घर (पाठक को उसका अपना अनुभवए भोगा हुआ यथार्थ) लगे, साहित्य के आस्वाद की जटिल–सी दिखाई पड़ती प्रक्रिया को सहज और सुगम करती है। यहाँ कथासरित्सागर (महाकवि सोमदेव विरचित) को याद किया जा सकता है, या यूँ कहिए की राजेश जोशी की कविताओं में किस्सागोई आपको खुद ही वहाँ लिए जाएगी ऊँगली पकड़कर। कथासरित्सागर वैसे तो अपने कलेवर में एकदम भिन्न है तब भी कथात्मक शैली और आम जन से जुड़ाव दो ऐसे संबंध सूत्र हैं जो समानान्तर पाठ की संभावना को जन्म देते हैं। राधावल्लभ त्रिपाठी ने कथासरित्सागर की भूमिका में लिखाः
'कथासरित्सागर कथाओं की ऐसी मंजूषा प्रस्तुत करता है जिसमें एक बड़ी मं मंजूषा के भीतर दूसरी, दूसरी को खोलने पर तीसरी निकल आती है। मूल कथा में अनेक कथाओं को समेट लेने की यह पद्धति रोचक भी है और जटिल भी।'[10] ठीक यही काम राजेश जोशी की कविताओं में भी घटित होता दिखाई देता है। जटिलता और रोचकता एक साथ आकर किसी विधा को विशेष तौर पर आमजन के निकट लाने का प्रयास करते हैं। सामान्य की इसी भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए कवि लोक के रूपों के निकट जाता है। कुछ इसी तरह के सफल प्रयास भारतेंदु ने मुकरियाँ, दो सुखने और नाटकों में गीतों को शामिल करके जातीय संगीत का उल्लेख किया था।

हमारे समय और परिस्थितियों के बीच से पैदा स्थितियों और घटनाओं से वे अपनी कविताओं में ऐसा कथासूत्र बुनते हैं जो लगातार एक के बाद एक आगे बढ़ता और खुलता चलता है, ठीक कथासरित्सागर के जैसे। यह कथा आम आदमी के (इत्यादि के) जीवन की, संघर्षों की कविता बनकर सामने आती है। आज के समय में इस कहानी का कहा जाना बहुत ज़रूरी है ताकि संघर्षों और स्वप्नों को आवाज़ देकर उदासीनता को भंग किया जा सके। इनकी एक कविता है एक–से मकानों का नगरः

किसी दूसरे शहर की गलियों में घूमते हुए
उसका चेहरा अपने शहर की गलियों से मिलाता हूँ...
पिछले पचास–साठ वर्शों में नए वास्तुशिल्पियों ने
कैसे ढाँचे तैयार किए हैं नए मकानों के
कि एकदम एक जैसे होते जाते हैं सारे शहरों के नाक नक्श
कितने साल बीते उस कहानीकार को याद किए
जिसने लिखी थी कहानी – एक से मकानों का नगर
लेकिन न हमारे पास वक़्त था, न कहानियों पर भरोसा
कि उसकी बात का मर्म समझ पाते
देखते देखते सारे शहर एक से मकानों से भरते जाते हैं
एक जैसी लगती है सारी सड़कें, सारी गलियाँ, सारे चौराहे
एक दिन सारे शहरों के चेहरे एक से हो जाएँगे।'[11]

कवि यथास्थिति के पक्ष में नहीं है, लेकिन समानता और एकरूपता का अंतर स्पश्ट कर देते हैं। राजेश जोशी की तमाम कविताओं के भीतर कथात्मक लय की अनुगूंजें अलग–अलग कोणों से सुनाई पड़ती हैं। किस्सागोई और काव्यात्मकता के भीतर से राजेश जोशी एक नया फार्मूला इज़ाद करते हैं अपनी कविताओं को रचने का। यह कथातत्त्व कविताओं में मिथक और इतिहास, यथार्थ और फ़ैन्टसी, सच्चाई और स्वप्न का अनूठा संगम पैदा करता है। मानव स्वभाओं के कई नमूने इस फार्मूले के केन्द्र में हैं जो मनोवैज्ञानिक पक्षों के साथ.साथ जीवन के सामाजिक.आर्थिक संघातों की कड़ियों को भी खोलते चलते हैं। राजेश जोशी की कविताओं को भाषिक संरचनाए स्वप्न और यथार्थबोध, प्रतिरोध और प्रयोगधर्मिता आदि बहुत से कोणों से देखा गया है। अभी और भी बहुत से सूत्रों के वहाँ होने की संभावनाएँ हैं पर मैं समझता हूँ कि उनकी कविताओं के भीतर जो कथालोक है उसे गंभीरता से पढ़ा जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 91
2. ए. अरविंदाक्षन, राजेश जोशी स्वप्न और प्रतिरोध, संपा.– नीरज, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण– 2013, पृष्ठ 25
3. राजेश जोशी, ज़िद. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015, पृष्ठ 54
4. संचयन नित्यानंद तिवारी – सम्पा.– डॉ. अजय तिवारी, नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण – 2020, पृष्ठ 283
5. राजेश जोशी, उल्लंघन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ 19
6. राजेश जोशी, नेपथ्य में हँसी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 1994, पृष्ठ 33
7. राजेश जोशी, चाँद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2006, पृष्ठ 16
8. राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 19
9. राजेश जोशी, एक कवि की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 37
10. महाकवि सोमदेव विरचित कथासरित्सागर, रूपांतर : राधावल्लभ त्रिपाठी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण 2006, पृष्ठ : नौ
11. राजेश जोशी, चाँद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2006, पृष्ठ 19